



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-11 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक ग्यारह | PDF

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग श्लोक 11

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥11॥
सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

हे अर्जुन! जो लोग जिस प्रकार और जिस भाव से मेरी शरण ग्रहण करते हैं, मैं भी उन्हें उसी प्रकार स्वीकार करता हूँ और उनके साथ वैसा ही व्यवहार करता हूँ। हे पार्थ! सभी मनुष्य हर प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।

विस्तृत व्याख्या

भगवान के प्रति जैसा भाव, वैसा ही फल

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण भक्ति और समर्पण के एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत को स्पष्ट करते हैं। भगवान कहते हैं कि जो व्यक्ति जिस प्रकार उनकी शरण में आता है,



भगवान भी उसे उसी भाव के अनुसार स्वीकार करते हैं।

यदि कोई व्यक्ति भगवान को प्रेम से स्मरण करता है, तो उसे प्रेम और भक्ति के माध्यम से भगवान की निकटता का अनुभव होता है। यदि कोई व्यक्ति सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए भगवान की आराधना करता है, तो उसे अपने कर्मों और भाव के अनुसार फल प्राप्त होता है।

इसका अर्थ यह है कि भगवान किसी व्यक्ति के साथ पक्षपात नहीं करते। प्रत्येक व्यक्ति अपने भाव, श्रद्धा, कर्म और समर्पण के अनुसार आध्यात्मिक तथा सांसारिक फल प्राप्त करता है।

“ये यथा मां प्रपद्यन्ते” – जिस प्रकार लोग मेरी शरण में आते हैं

“ये यथा मां प्रपद्यन्ते” का अर्थ है—जो लोग जिस प्रकार मेरी शरण ग्रहण करते हैं।

हर व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा एक जैसी नहीं होती। कोई भगवान की भक्ति प्रेम के कारण करता है, कोई दुःख के समय उनकी शरण लेता है, कोई ज्ञान की खोज में परमात्मा की ओर बढ़ता है और कोई सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए पूजा करता है।

भगवान सभी के भाव को जानते हैं। वे व्यक्ति की बाहरी स्थिति, सामाजिक पहचान या केवल दिखावटी कर्मों को नहीं, बल्कि उसके भीतर के वास्तविक भाव और समर्पण को महत्व देते हैं।



यह श्लोक सिखाता है कि भगवान तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को अपने भीतर सच्ची श्रद्धा और ईमानदारी विकसित करनी चाहिए।

“तांस्तथैव भजाम्यहम्” – मैं भी उन्हें उसी प्रकार स्वीकार करता हूँ

भगवान कहते हैं—“तांस्तथैव भजाम्यहम्”, अर्थात् मैं भी उन्हें उसी प्रकार स्वीकार करता हूँ।

यहाँ भगवान के “भजामि” करने का अर्थ केवल पूजा करना नहीं है, बल्कि भक्त के भाव के अनुसार उसे अनुग्रह, मार्गदर्शन और फल प्रदान करना है।

जो व्यक्ति भगवान के प्रति जितना सच्चा समर्पण करता है, उसके जीवन में उतनी ही गहराई से आध्यात्मिक परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है।

जब साधक भगवान को केवल बाहरी पूजा तक सीमित न रखकर अपने विचारों, कर्मों और जीवन का आधार बनाता है, तब उसका संबंध परमात्मा के साथ अधिक गहरा होने लगता है।

भगवान पक्षपात नहीं करते

इस श्लोक का एक महत्वपूर्ण संदेश यह है कि भगवान सभी प्राणियों के प्रति समान हैं।

भगवान किसी व्यक्ति को केवल उसकी जाति, जन्म, धन, शक्ति या सामाजिक स्थिति के आधार पर अधिक या कम कृपा नहीं देते।



व्यक्ति की आंतरिक भावना, कर्म और समर्पण उसकी आध्यात्मिक यात्रा को प्रभावित करते हैं।

जो व्यक्ति सच्चे हृदय से भगवान की ओर बढ़ता है, उसके लिए आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग खुलता है।

इस प्रकार भगवान की कृपा सबके लिए उपलब्ध है, लेकिन व्यक्ति उसे अपने भाव और समर्पण के अनुसार अनुभव करता है।

“मम वर्त्मानुवर्तन्ते” – सभी मेरे मार्ग का अनुसरण करते हैं

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—“मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः”, अर्थात् हे अर्जुन! सभी मनुष्य किसी न किसी प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।

इसका अर्थ है कि संसार में मनुष्य भले ही अलग-अलग उद्देश्यों, विचारों और मार्गों का अनुसरण करे, लेकिन संपूर्ण सृष्टि परमात्मा द्वारा स्थापित नियमों और व्यवस्था के अंतर्गत चलती है।

कोई व्यक्ति ज्ञान का मार्ग अपनाता है, कोई भक्ति का, कोई कर्म का और कोई अपने सांसारिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए जीवन जीता है। सभी के कर्म और उनके परिणाम अंततः उसी सार्वभौमिक व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं जिसे भगवान संचालित करते हैं।



इसलिए मनुष्य को अपने मार्ग का चयन विवेक, धर्म और सत्य के आधार पर करना चाहिए।

भक्ति के विभिन्न भाव

हर व्यक्ति भगवान के पास एक ही उद्देश्य से नहीं आता।

कुछ लोग दुःख और संकट में भगवान को याद करते हैं। कुछ लोग धन, सफलता या अन्य सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। कुछ लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए भगवान की शरण लेते हैं और कुछ लोग केवल प्रेम तथा पूर्ण समर्पण के भाव से उनकी भक्ति करते हैं।

भगवान इन सभी भावों को जानते हैं और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी स्थिति, कर्म और समर्पण के अनुसार मार्ग प्रदान करते हैं।

लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्च स्थिति वह है, जहाँ व्यक्ति भगवान की भक्ति किसी स्वार्थ या इच्छा के कारण नहीं, बल्कि प्रेम, श्रद्धा और पूर्ण समर्पण के साथ करता है।

पिछले श्लोक से संबंध

श्लोक 10 में भगवान श्रीकृष्ण ने बताया कि बहुत से साधक राग, भय और क्रोध से मुक्त होकर, भगवान में मन लगाकर और ज्ञानरूपी तपस्या के द्वारा पवित्र होकर भगवान की प्राप्ति तक पहुँचे हैं।

अब श्लोक 11 में भगवान बताते हैं कि लोग जिस भाव और जिस प्रकार से उनकी शरण ग्रहण करते हैं, भगवान भी उन्हें उसी के अनुसार स्वीकार करते हैं।



इस प्रकार श्लोक 10 साधक की आंतरिक शुद्धि और भगवान की प्राप्ति के मार्ग को बताता है, जबकि श्लोक 11 यह स्पष्ट करता है कि भगवान सभी साधकों के भाव और समर्पण के अनुसार उन्हें मार्गदर्शन और फल प्रदान करते हैं।

कर्म, भक्ति और समर्पण का संबंध

यह श्लोक बताता है कि आध्यात्मिक जीवन केवल एक विशेष प्रकार की साधना तक सीमित नहीं है।

मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भी भगवान के प्रति श्रद्धा और समर्पण रख सकता है। जब व्यक्ति अपने कर्मों में धर्म, सत्य और निःस्वार्थ भाव को अपनाता है, तब उसके कर्म भी आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम बन सकते हैं।

भक्ति केवल मंदिर, पूजा या विशेष समय तक सीमित नहीं है। यदि व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में ईमानदारी, करुणा, आत्मसंयम और धर्म का पालन करता है तथा अपने कर्मों को भगवान को समर्पित करता है, तो उसका जीवन भी साधना का रूप ले सकता है।

मुख्य बिंदु

- भगवान प्रत्येक व्यक्ति को उसके भाव और समर्पण के अनुसार स्वीकार करते हैं।
- व्यक्ति जिस प्रकार भगवान की शरण में आता है, उसे उसी के अनुरूप मार्गदर्शन और फल प्राप्त होता है।
- भगवान किसी के साथ पक्षपात नहीं करते।



- सच्ची भक्ति का आधार बाहरी दिखावा नहीं, बल्कि आंतरिक श्रद्धा और समर्पण है।
- अलग-अलग लोग भगवान की शरण अलग-अलग उद्देश्यों से लेते हैं।
- प्रेम और निःस्वार्थ भाव से की गई भक्ति आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग बनती है।
- संसार के सभी कर्म और मार्ग परमात्मा द्वारा स्थापित व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं।
- मनुष्य को अपने जीवन का मार्ग धर्म, सत्य और विवेक के आधार पर चुनना चाहिए।
- कर्म करते हुए भी भगवान के प्रति समर्पण रखा जा सकता है।
- सच्चा समर्पण व्यक्ति के जीवन में आंतरिक शांति और आध्यात्मिक विकास लाता है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

इस श्लोक का गहरा आध्यात्मिक अर्थ यह है कि परमात्मा और जीव के बीच संबंध व्यक्ति के आंतरिक भाव से निर्मित होता है।

भगवान सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध हैं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी चेतना, श्रद्धा और समर्पण के अनुसार परमात्मा का अनुभव करता है।



जो व्यक्ति केवल सांसारिक इच्छाओं के साथ भगवान की ओर बढ़ता है, उसकी साधना भी मुख्य रूप से उन्हीं इच्छाओं के आसपास रहती है। लेकिन जब साधक धीरे-धीरे अपनी सीमित इच्छाओं से ऊपर उठकर ज्ञान, प्रेम और पूर्ण समर्पण के साथ भगवान की शरण लेता है, तब उसकी चेतना में गहरा परिवर्तन होने लगता है।

“ये यथा मां प्रपद्यन्ते” यह संदेश देता है कि भगवान तक पहुँचने की यात्रा व्यक्ति के भीतर से प्रारंभ होती है। मनुष्य जैसा भाव लेकर परमात्मा की ओर बढ़ता है, वैसा ही अनुभव और आध्यात्मिक मार्ग उसके सामने विकसित होता है।

“मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः” का अर्थ यह भी है कि संसार में दिखाई देने वाली विविधता के पीछे भी एक परम व्यवस्था कार्य कर रही है। मनुष्य अलग-अलग मार्गों पर चल सकते हैं, लेकिन संपूर्ण जीवन और कर्म परमात्मा की व्यापक व्यवस्था के अंतर्गत ही संचालित होते हैं।

इसलिए साधक को बाहरी भेदों में उलझने के बजाय अपने मन, कर्म और भाव को शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।

पदों का भावार्थ

ये – जो लोग

यथा – जिस प्रकार, जिस भाव से

माम् – मुझे

प्रपद्यन्ते – मेरी शरण ग्रहण करते हैं, मेरी ओर आते हैं



तान् – उन लोगों को

तथा एव – उसी प्रकार

भजामि – स्वीकार करता हूँ, अनुग्रह करता हूँ

अहम् – मैं

मम – मेरे

वर्त्म – मार्ग

अनुवर्तन्ते – अनुसरण करते हैं

मनुष्याः – सभी मनुष्य

पार्थ – हे पृथापुत्र अर्जुन

सर्वशः – सभी प्रकार से, हर प्रकार से

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो लोग जिस भाव और जिस प्रकार से भगवान की शरण ग्रहण करते हैं, भगवान भी उन्हें उसी भाव के अनुसार स्वीकार करते हैं और मार्ग प्रदान करते हैं।

यह श्लोक हमें सिखाता है कि भगवान के प्रति हमारा संबंध केवल बाहरी पूजा-पद्धति से नहीं, बल्कि हमारे भीतर की श्रद्धा, प्रेम और समर्पण से बनता है।



यह श्लोक हमें सिखाता है कि भगवान के प्रति हमारा संबंध केवल बाहरी पूजा-पद्धति से नहीं, बल्कि हमारे भीतर की श्रद्धा, प्रेम और समर्पण से बनता है।

सच्ची भक्ति, धर्मपूर्ण कर्म, आत्मसंयम और भगवान के प्रति समर्पण के माध्यम से मनुष्य अपने जीवन को आध्यात्मिक दिशा दे सकता है।

जब व्यक्ति स्वार्थ और केवल सांसारिक इच्छाओं से ऊपर उठकर भगवान की ओर सच्चे हृदय से बढ़ता है, तब उसका जीवन ज्ञान, शांति और आत्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने लगता है।

इस श्लोक का मुख्य संदेश है कि भगवान सभी के लिए समान हैं, और मनुष्य जिस भाव से उनकी ओर बढ़ता है, उसी भाव के अनुरूप उसे भगवान की कृपा, मार्गदर्शन और आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त होता है।



RELATED ARTICLE



[Chapter-4 Shalok-9](#)



[Chapter-4 Shalok-10](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

